महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आज़मगढ़

द्वारा आयोजित

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

(हाइब्रिड मोड)

‘योग: शरीर, मन और आत्मा से मुक्ति की ओर एक मार्ग’

'Yoga: A path from body, mind and soul to liberation'

सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

श्रीमती आनंदीबेन पटेल

माननीया कुलाधिपति एवं राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

अध्यक्षता

प्रो. संजीव कुमार

कुलपति

महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

श्री विशेश्वर प्रसाद

कुलसचिव,

महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आज़मगढ़

‘Yoga for One Earth, One Health’

आमंत्रित वक्ता

संयोजक

प्रो. प्रशांत कुमार राय

आचार्य सन्तोष

इंटरनेशनल योगा ट्रेनर, हनोई, वियतनाम

डाक्टर सुमित शर्मा

आयुर्वेदाचार्य,योगाचार्य, सिडनी,आस्ट्रेलिया

योगी सुखदेव

योगा एंड वेलनेस ट्रेनर, सिंगापुर

डॉ. टी.एन. पांडेय

आयुर्वेद,योग और प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ

श्री पवन सिंह

संयोजक, लोक दायित्व

सह संयोजक

शुभम राय

वैशाली सिंह

सूर्य प्रकाश अग्रहरि

20 जून 2025, शुक्रवार

प्रातः 10 बजे

-- स्थान --

न्यू सेमिनार हॉल (फैसिलिटी सेंटर)

MSDU कैंपस, आजमगढ़

आयोजन सचिव

तृषिका श्रीवास्तव

हिमांशु शेखर

डॉ. वंदना गिरी

संगोष्ठी की परिकल्पना एवं उद्देश्य

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा।।

श्रीमद भगवतगीता 6.23

अर्थात् दुख के संयोग से वियोग की अवस्था को योग के रूप में जाना जाता है। इस योग का दृढ़तापूर्वक कृतसंकल्प के साथ निराशा से मुक्त होकर पालन करना चाहिए।

योग भारतीय संस्कृति की एक अनुपम देन है, जो आज सम्पूर्ण विश्व को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन प्रदान कर रही है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित यह संगोष्ठी योग के विभिन्न पहलुओं 'ज्ञान और अनुभव' को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास है। वर्तमान में योग वैश्विक स्तर पर मानव जीवनशैली का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाना इस प्राचीन ज्ञान परंपरा को वैश्विक मान्यता और सम्मान देने का स्पष्ट संकेत है।
इस महत्वपूर्ण अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी योग के वैज्ञानिक, दार्शनिक और व्यवहारिक पक्षों पर सार्थक संवाद के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है– योग के विविध आयामों पर गहन विचार-विमर्श कर आधुनिक जीवन में इसकी प्रासंगिकता को उजागर करना। इसमें विश्व के विभिन्न देशों से विद्वानों, योग विशेषज्ञों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं की सहभागिता के माध्यम से ज्ञान, अनुभव और अनुसंधान का व्यापक आदान-प्रदान सुनिश्चित किया जाएगा।

योग केवल एक शारीरिक व्यायाम पद्धति नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, आध्यात्मिकता और जीवन शैली की एक समग्र अभिव्यक्ति है। यह शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है, जो व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाता है, बल्कि मानसिक रूप से भी सशक्त करता है। जब हम नियमित रूप से योग का अभ्यास करते हैं और निरंतर मानसिक तथा शारीरिक बल को विकसित करते हैं, तब हम सौहार्द और मैत्री भाव से युक्त होकर अनंत शक्ति के स्रोत, परमेश्वर का स्मरण करते हैं और उन्हीं से मार्गदर्शन एवं सहायता की कामना करते हैं।
आज के व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन में योग की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। इसी संदर्भ में आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य योग के व्यापक आयामों को उजागर करना है, जिसमें इसके सांस्कृतिक पक्षों, आध्यात्मिक अनुभवों और समग्र मानव कल्याण में योग की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

इस संगोष्ठी में शिक्षाविदों, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, पेशेवरों और योगाचार्यों को आमंत्रित किया गया है, जो आधुनिक जीवनशैली में योग के समावेश और उसके लाभों पर विचार-विमर्श करेंगे। साथ ही, स्कूलों, विश्वविद्यालयों, कार्यस्थलों और सामुदायिक केंद्रों में योग को एक आवश्यक अंग के रूप में अपनाने के उपायों पर भी चर्चा होगी।
विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों के माध्यम से यह संगोष्ठी एक अंतरराष्ट्रीय संवाद का मंच बनेगी, जहाँ ज्ञान, अनुभव और अनुसंधान का आदान-प्रदान योग के क्षेत्र में नवाचार और सहयोग की नई संभावनाएं उत्पन्न करेगा।

संगोष्ठी की संभावनाएँ एवं लाभ

- अंतरराष्ट्रीय वक्ताओं का संबोधन, जिससे यह प्रदर्शित होगा कि आज योग को वैश्विक स्तर पर स्थान प्राप्त हो चुका है।
- शोध पत्र प्रस्तुति एवं अनुभव साझा सत्र।
- चयनित लेखों की संकलित पुस्तक का प्रकाशन।
- सहभागियों को प्रमाण-पत्र वितरण।
- वैश्विक स्तर योग की उपयोगिता और महत्व चर्चा।
- संस्कृति और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधि भारतीय संस्कृति से जुड़ेंगे।
- शोध और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा। ज्ञान और अनुभव के मिलन से नए शोध और पद्धतियाँ विकसित हो सकती हैं।
- यह संगोष्ठी नयी पीढ़ी के युवाओं को योग से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन सकती है।

प्रमुख उप-विषय

- योग की अवधारणा एवं स्वरूप
- योग और आयुर्वेद
- योग का वैज्ञानिक आधार
- योग: भारतीय दर्शन की धरोहर
- योग और स्त्री शक्ति
- युवा और योग: शिक्षा में भूमिका
- योग और समकालीन साहित्य
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में योग का पुनर्मूल्यांकन
- विद्यार्थी जीवन में योग महत्व
- योग एवं अन्य विषयों के साथ सह संबंध
- भारत के विशिष्ट योग आचार्य
- विदेशी मूल के योग आचार्य
- योग और स्वास्थ्य लाभ
- विश्व की विविध भाषाओं में योग तत्त्व
- अर्वाचीन गद्य, पद्य, नाटक, चम्पू तथा महाकाव्य आदि काव्यों में योग के विविध सन्दर्भ
- योग सूत्र की उपलब्ध टीकाओं में नवीन संभावनाएं
- योग और बाल मन
- योग एवं दर्शन
- योग एवं पाश्चात्य दर्शन

महत्त्वपूर्ण निर्देश

- प्रतिभागियों द्वारा संगोष्ठी में वाचन हेतु शोध पात्र सारांश एवं प्रकाशन हेतु सम्पूर्ण शोध पात्र आमंत्रित हैं।
- चयनित शोध पत्रों की एक सम्पादित पुस्तक ISBN नंबर के साथ प्रकाशित की जाएगी।
- शोध पात्र हिंदी एवं अंग्रेजी (यूनिकोड) फॉन्ट में एवं वर्ड फाइल में ही स्वीकार किये जायेंगे।
- शोध पत्र के सन्दर्भ में किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु 7376759759 से संपर्क करें।
- अपने शोध पत्र iydmsduniversity@gmail.com पर प्रेषित करें।
- शोध पत्र के अंत में अपना पूरा नाम, घर/कॉलेज का पता (पिनकोड सहित), मोबाइल नं, ई-मेल अवश्य लिखें। इसके आभाव में यदि शोध पत्र प्रकाशन में कोई असुविधा होती है तो आयोजकों का उत्तरदायित्व नहीं होगा।
- पूर्ण शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 20 जून 2025 है। अधिकतम शब्द सीमा 3000 है।
- कोई भी पंजीकरण शुल्क नहीं है।

पंजीकरण दिए गए लिंक या क्यू आर कोड के माध्यम से किया जा सकता है

https://forms.gle/sMW9FXs5KkyS8mhq8

परामर्श समिति

- डॉ. एच. आर. नागेंद्र, पद्म श्री, चांसलर- SVYASA विश्वविद्यालय बंगलुरु
- प्रो. के. सत्य लक्ष्मी, निदेशक, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ नेचुरोपैथी
- आई. बी. बसवरेड्डी, पूर्व निदेशक, मोरारजी देसाई नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ योग
- प्रो. ए. डी. एन. वाजपेयी, कुलपति, अटल विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
- प्रो. जी. डी. शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, एसोसिएशन ऑफ़ इंडियन यूनिवर्सिटी
- स्वामी विद्याप्रदानंदा जी, विभागाध्यक्ष, योग, वेल्लोर मठ, कर्नाटक
- डॉ. अमित यादव, निदेशक, इंडियन कॉउंसिल ऑफ़ फिलॉसफिकल रिसर्च

आयोजन समिति

प्रो. अर्पिता मिश्रा, डॉ. अमरजीत, डॉ. हरिलाल, डॉ. मो. आसिम,
डॉ. शशि प्रकाश शुक्ला, डॉ. शिवेंद्र कुमार सिंह,
धीरज यादव, सौरभ सिंह